उपसंहार

नाटक एक ऐसी साहित्य की विधा है जो अपने दृश्यत्व के कारण साहित्य की अन्य विधाओं से अलग है । नाटक अपने दृश्यत्व के कारण दर्शकों के लिए अधिक रमणीय, मनोरंजक और आस्वाद्य होता है । उपन्यास, कहानी जैसी रचनाओं में रचनाकार जो कहता है इसे नाटककार अपने नाटक में प्रेक्षकों के सम्मुख रंगमंच पर उपस्थित कर सकता है । यही कारण है कि नाटक को ' दृश्यकाव्य' कहा जाता है और "काव्येषु नाटकम् रम्यम्" ऐसा माना जाता है ।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक में भीष्म साहनी के नाटक अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं । उनके नाटक संख्या में उँगलियों पर गिने जाने योग्य है पर वे अत्यंत मौलिक हैं । सामाजिक यथार्थता, पौराणिकता, समसामयिकता तथा ऐतिहासिकता जैसे विषयों को लेकर भीष्म साहनी ने अपने नाटकों का सृजन किया है ।

सातवें दशक के हिंदी नाटककारों में अपना विशिष्ट स्थान रखनेवाले भीष्म साहनी का जन्म रावलपिण्ड़ी में 8 अगस्त 1915 को हुआ । उनकी प्रारंभिक शिक्षा शहर के नजदीक गुरूकूल में हुई । वहाँ से डेढ़-दो साल की पढ़ाई के बाद वे अपने बड़े भाई बलराज के साथ स्थानीय डी.ए.वी. स्कूल में भर्ती किए गए । उन्होंने ई.स. 1933 में Intermediate की परीक्षा उत्तीर्ण की । उनकी आगे की पढ़ाई लाहौर में हुई । लाहौर के गवर्नमेंट कालिज से ई.स.1935 में वे बी.ए. पास हुए तथा ई.स. 1937 में वे एम्.ए. (अंग्रेजी साहित्य) उत्तीर्ण हुए । आगे चलकर उन्होंने पीएच.डी. की उपाधि पंजाब विश्वविद्यालय से प्राप्त की ।

एम्.ए. की उपाधि प्राप्त करने के बाद ई.स. 1937 से 1947 तक भीष्म साहनी ने व्यापार स्थानीय कालिज में ऑनरेरी अध्यापन, नाटक खेलना तथा कांग्रेसी काम करना आदि काम किए । 15 अगस्त, 1947के दिन वे दिल्ली में ही थे ।

देश के बँटवारे के बाद वे वापस रावलपिण्ड़ी नहीं गए । दिल्ली से वे सीधे बंबई अपने बड़े भाई बलराज साहनी के पास चले गए । बंबई में उन्होंने अपने दिन बेकारी में काटे । उसके बाद कुछ समय अंबाला तथा दिल्ली में वे अध्यापक के रूप में काम करते रहे । भारत सरकार की ओर से वे

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY SHIVAJI UNIVERSITY
SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY

ई.स. 1957में अनुवादक के रूप में चुने गए । सन1957 से 1963 तक लगभग सात साल वे मास्को में अनुवादक के रूप में रहे ।वहाँ से लौटने के बाद उन्होंने दिल्ली के कालिज में नौकरी की । जाकिर हुसेन कालिज में वे ई.स. 1980 तक अर्थात अवकाश-प्राप्ति के समय तक अंग्रेजी का अध्यापन करते रहे । अवकाश-प्राप्ति के बाद वे स्वतंत्र रूप से लेखन कार्य में जुट गए ।

भीष्म साहनी को अपने स्कूली दिनों के दोस्तों की याद अभी तक है । बचपन में उनकी दोस्ती अधिकतर गरीब लड़कों के साथ थी । उन्हें बरकतराम, रोशनलाल, धर्मदत्त और हरबंसलाल जैसे दोस्तों की याद अभी भी आती है । कालिज के दिनों में उनकी दोस्ती कालिज के अध्यापकों के साथ भी हुई तथा उनकी दोस्ती अपने बड़े भाई के दोस्तों के साथ भी रही । कालिज के दिनों में उनकी दोस्ती इल्ताफ हुसेन नामक मुसलमान लड़के के साथ भी थी । उनके घर का माहौल सादगीपूर्ण और धार्मिक था। उनके व्यक्तित्व पर अपने माता-पिता के धार्मिक एवं सादगीपूर्ण व्यवहार का प्रभाव पडा है । वे अपने बड़े भाई बलराज के व्यक्तित्व से भी काफी प्रभावित हुए हैं । उनमें और उनके बड़े भाई के स्वभाव और व्यक्तित्व में काफी अंतर था ।

भीष्म साहनी का व्यक्तित्व बहुआयामी है । वे बहुत ही सीधे और सरल स्वभाव के हैं । सादगी, विनम्रता, सहनशीलता और सेवाभाव उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ हैं । उन्हें खान-पान संबंधी विशेष रूचि नहीं हैं । स्कूली दिनों से कालिज के दिनों तक उन्हें खेलकुद में विशेष रूप में हॉकी खेलने में रूचि हैं ।उन्हें डिबेटिंग तथा नाटकों में हिस्सा लेना भी काफी अच्छा लगता था । इसके अतिरिक्त तैराकी, घुमक्कडी ,यात्रा करना तथा कलाप्रदर्शनी देखना उन्हें पसंद है । उनके लिए इतिहास , समाजशास्त्र और साहित्य की पढ़ाई विशेष रूचिकर है। पत्नी शीला की नजर में भीष्म साहनी एक अत्यंत अच्छे पति हैं । परंतु पत्नी शीला को उनकी अत्यधिक विनम्रता और उनका शाम के समय लिखना बिलकुल नहीं भाता । पुत्र वरूण तथा पुत्री कल्पना के वे प्यारे पापा हैं । वे अपने बच्चों की समस्याएँ स्वयं हल कर देते हैं । अपने बेटे वरूण के साथ, बिना क्रोधित हुए वे घंटों बहस करते हैं ।

भीष्म साहनी ने नौ कहानी संग्रह, छह उपन्यास, पाँच नाटक तथा एक निबंध संग्रह आदि का सृजनकर हिंदी साहित्य की श्रीवृद्धि की है । ' हिंदी उपन्यास ' तथा ' नई कहानी ' का संपादन कार्य भी उन्होंने किया है । उन्होंने अपने बड़े भाई बलराज पर आधारित 'बलराज भाई ब्रदर्स ' नामक जीवनी अंग्रेजी में लिखी है । उन्होंने बालोपयोगी कहानियाँ भी लिखी हैं । उन्होंने दो दर्जन रूसी पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद किया है । वे 'साहित्य अकादमी,' 'प्रेमचंद पुरस्कार','लोटस पुरस्कार' आदि पुरस्कारों

से विभूषित हुए हैं । अपने जीवन अनुभवों ने ही उन्हें लेखन की सामग्री दी है । इसलिए वे एक सशक्त रचनाकार के रूप में ख्याति प्राप्त हैं ।

भीष्म साहनी ने ई.स. 1977 में प्रकाशित और उसी साल रंगमंचित हुए अपने प्रथम नाटक 'हानूश ' के साथ एक नाटककार के रूप में हिंदी साहित्य में पदार्पण किया । उन्होंने सन1977 से 1996 तक पाँच मौलिक नाटकों का सृजन किया है; वे एक प्रयोगधर्मी नाटककार सिद्ध होते हैं । उन्होंने अपने प्रत्येक नाटक में विषयवस्तु के स्तर पर प्रयोगधर्मिता को स्थान दिया है । उनके प्रथम नाटक 'हानूश' की विषयवस्तु चेक लोक-कथा पर आधारित है तो द्वितीय नाटक 'कबिरा खड़ा बजार में ' की विषयवस्तु मध्ययुगीन संत कबीर के जीवनपर आधारित होने के कारण व्यक्तिपरक है । उनकी तृतीय नाट्यरचना 'माधवी ' महाभारत की एक कथा पर आधारित होने के कारण उसकी विषयवस्तु पौराणिक है । उनकी चौथी नाट्यकृति ' मुआवज़े ' आजकल शहर में हो रहे सांप्रदायिक दंगों को लेकर है, इसलिए उसकी विषयवस्तु समसामयिक घटना और समस्या पर आधारित है । उनका पाँचवाँ नाटक 'रंग दे बसन्ती चोला ' भारतीय स्वातंत्र्य-समर की घृणास्पद घटना जलियाँवाले बाग हत्याकाण्ड पर आधारित होने के कारण उसकी विषयवस्तु ऐतिहासिक है । इस प्रकार हम देखते हैं कि भीष्म साहनी ने अपने हर नाटक में विषयवस्तु के स्तर पर प्रयोग किये हैं । विवेच्य सारे नाटकों में चरित्र चित्रण और देश-काल-वातावरण का सफल चित्रण हुआ है । विवेच्य नाटकों में भाषा का सफल निर्वाह हुआ है । वे अपने हर नाटक में उद्देश्य की स्थापना करने में सफल हुए है । 'हानूश ' नाटक में भीष्म साहनी राज-सत्ता , धर्म-सत्ता और व्यापारी वर्ग की नीति में सामान्य वर्ग के लोगों के कुचले जाने पर भी उनकी विजय दिखलाने के उद्देश्य में सफल हुए है । जेकब के पलायन के कारण घड़ी का भेद जिंदा रहने से 'हानूश ' में एक सामान्य कलाकार की विजय होती है । 'कबिरा खड़ा बजार में ' नाट्यरचना में नाटककार ने तत्कालीन राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक परिस्थितियों से जूझते कबीर के निर्भीक सत्यान्वेषी और प्रखर व्यक्तित्व को दर्शाने के उद्देश्य में सफल हुआ है । ' माधवी ' नाटक में माधवी की जीवन-कथा के माध्यम से सदियों से चली आयी नारी की स्थिति और माधवी के चले जाने से आधुनिक नारी का रूप दर्शाने के उद्देश्य में नाटककार सफल हुआ है । 'मुआवज़े ' नाट्यकृति में नाट्यकार अपने इस तथ्य की ओर इंगित करने में सफल हुआ है कि दंगे के दौरान खत्म हो जानेवाली जिंदगियों का मुआवज़ा तो हम देगे पर मानवीय मूल्यों और नीति का मुआवज़ा हम कहाँ से दंगे ? " रंग दे बसन्ती चोला " इस ऐतिहासिक नाटक के जरिए राष्ट्रीयता की भावना को उजागर करने के उद्देश्य में नाटककार सफल हुआ है ।उनके पाँचों नाटक रंगमंचीय दृष्टि से भी सफल हैं ।

भीष्म साहनी के नाटकों में स्थान स्थान पर सामाजिक चेतना के दर्शन होते हैं । उनके नाटकों में सामाजिक चेतना के कारण पारिवारिक संबंधों का यथार्थ और मानवीय चित्रण प्राप्त होता है । उनके 'हानूश ' नाटक में हानूश और उसकी पत्नी कात्या के बीच के झगड़ों के साथ ही कोमल और आंतरिक प्रेमभावना का मनोहारी चित्रण प्राप्त होता है । 'कबिरा खड़ा बजार में ' के कबीर और लोई के बीच के पति–पत्नी संबंध यथार्थ की ठोस नींव पर खड़े हो जाते हैं । 'माधवी ' नाटक में माधवी और उसके तीन राजाओं के साथ के पति–पत्नी संबंध एक सौदा–स्वरूप तय हो जाते हैं जो बनकर फिर टूट जाते हैं । 'मुआवज़े ' की शांति का पत्नी का रिश्ता दीनू के साथ मुआवज़े के पैसे के लोभ में तय किया जाता है जो अतिरंजित और काल्पनिक लग सकता है लेकिन बाद में शांति धीरे–धीरे दीनू से प्यार करती है ।दीनू और शांति के बीच का पति–पत्नी संबंध मानवीय रूप धारण कर स्थायी रूप ग्रहण करता है । 'रंग दे बसन्ती चोला 'में हेमराज और रतनदेवी के बीच पति–पत्नी का संबंध प्रेमपूर्ण चित्रित हुआ है। जलियाँवाले बाग के गोलीकाण्ड में मारे गये अपने पति हेमराज की मृत्यु पर रतनदेवी आँसू बहाना नहीं चाहती । वह खुद को चिर–सुहागन मानती है ।इस प्रकार भीष्म साहनी ने अपने पाँचों नाटकों में सामाजिक चेतना के कारण पति–पत्नी संबंधों का यथार्थ चित्रण किया है ।

भीष्म साहनी ने पारिवारिक संबंधों का चित्रण करते समय ' हानूश 'में माँ–बेटी, और पिता–पुत्री के संबंधों पर रोशनी डाली है ।'माधवी ' नाटक के राजा ययाति और उसकी बेटी माधवी के पिता–पुत्री के संबंध कर्तव्य और निष्ठा की तीखी धार पर चलते हैं और माधवी को दु:खी बनाते हैं । 'कबिरा खड़ा बजार में ' नाटक में भीष्म साहनी ने नूरा–कबीर, नीमा –कबीर में क्रमशः पिता–पुत्र और माता–पुत्र के स्नेहभरे संबंधों का हृदयस्पर्शी चित्रण किया है । इसी नाटक के नन्दू भिखारी और उसकी अंधी माँ के प्यार का नाटककार ने हृदयद्रावक वर्णन किया है । नाटककार ने 'हानूश 'में पादरी और हानूश के बीच के भाई–भाई के संबंधों का चित्रण कर भाई–भाई के आपसी प्यार और सद्भावना को प्रकाशित किया है । 'रंग दे बसन्ती चोला ' में नाटककार ने रतनदेवी ,सोहनसिंह के बहन–भाई के संबंधों का चित्रण किया है ।इसी नाटक में हेमराज और सोहनसिंह के बहनोई साले का सबंध यथार्थ रूप में चित्रित हुआ है ।इस प्रकार भीष्म साहनी ने पारिवारिक संबंधों का यथार्थ चित्रण किया है ।

समाज में रहनेवाले व्यक्ति के संबंध केवल पारिवारिक नहीं होते । अपने परिवार में स्थित व्यक्तियों को छोड़ अन्य व्यक्तियों के साथ भी व्यक्ति के सामाजिक संबंध होते हैं । दोस्त–दोस्त सबंध और गुरू–शिष्य संबंध सामाजिक संबंध ही कहलाते हैं । इन संबंधों का चित्रण नाटककार ने क्रमशः 'हानूश ' और 'माधवी ' में किया है ।

समाज में स्थित व्यक्ति के जीवन पर राज–सत्ता ,धर्म–सत्ता, अर्थ–सत्ता और शासन व्यवस्था का प्रभाव पड़ता है । भीष्म साहनी ने सामाजिक चेतना के कारण इन सब बातों का चित्रण किया है । उन्होंने राज सत्ता की निरंकुशता का चित्रण ' हानूश ' और ' कबिरा खड़ा बजार में ' कर राज–सत्ता की निर्ममता और स्वार्थपरता, को उजागर किया है । उन्होंने ' हानूश ' नाटक में पादरी के माध्यम से धर्म–सत्ता की दोहरी नीति का भाण्डा फोड़ा है । उन्होंने "रंग दे बसन्ती चोला " नाटक में अंग्रेजी शासन व्यवस्था की क्रूरता और अमानवीयता का यथार्थ चित्रण किया है । उन्होंने ' हानूश ' नाटक में व्यापारी वर्ग के जरिए अर्थ–सत्ता की नीति को रूपायित किया है । समाज में विवाह प्रथा अपना विशेष महत्त्व रखती है। नाटककार ने 'माधवी ' और 'मुआवज़े ' में विवाह प्रथा का चित्रण किया है । उन्होंने हिन्दू समाज की जाति–व्यवस्था और छुआछूत की प्रथा का यथार्थ चित्रण ' कबिरा खड़ा बजार में ' किया है । निष्कर्षतः भीष्म साहनी एक सजग सामाजिक चेतना से अनुप्रणित होकर लिखनेवाले नाटककार के रूप में हमारे सामने आते है ।

भीष्म साहनी एक मानवतावादी नाटककार भी हैं । उन्होंने स्थान–स्थान पर मनुष्य को उर्ध्वगामी बनानेवाली भावनाओं का चित्रण अपने नाटकों के पात्रों में कर, अपनी मानवतावादी चेतना का परिचय दिया है। दया, करूणा, परदुःखकातरता तथा परोपकार के कारण मनुष्य परदुःखनिवारण की ओर अग्रेसर होता है । ऐसी हालत में मनुष्य स्वहित की अपेक्षा परहित की सोचकर मानवता की ओर आगे बढ़ता है। "कबिरा खड़ा बजार में " के जुलाहा दंपति नूरा–नीमा , नायक कबीर और ' रंग दे बसन्ती चोला ' के हेमराज और रतनदेवी तथा ईशरो में ये सद्गुण भरे हैं । भीष्म साहनी ने उन्हें मानवतावादी दर्शाया है । कर्तव्य, त्याग और निष्ठा ये गुण मनुष्य को महामानव बनाते हैं । भीष्म साहनी ने 'माधवी ' नाटक के प्रमुख पात्र माधवी, गालव और ययाति का जीवन कर्तव्य,त्याग और निष्ठा की तीखी धार पर चलता हुआ दिखाकर अपनी मानवतावादी चेतना का प्रमाण प्रस्तुत किया है । मानवतावादी प्रेम की महत्ता को जानता है । भीष्म साहनी ने ' माधवी ' की नायिका माधवी और ' मुआवज़े ' की प्रमुख पात्र शांति को प्रेम की महत्ता को दिग्दर्शित करनेवाली स्त्रियों के रूप में चित्रित किया है । उनके माध्यम से भीष्म साहनी ने प्रेम की महत्ता को रूपायित करते हुए अपनी मानवतावादी चेतना को व्यक्त किया है । जाति–पाँति ,हिन्दू–मुलिमों के बाह्याडम्बर जैसी बातों से मनुष्यों में भेद–भावना बढ़ती है , आपसी वैर–भाव पनपता है । भेद–भावना, ऊँच–नीचता तथा वैमनस्य मानवता के खिलाफ हैं । अतः भीष्म साहनी ने ' कबिरा खड़ा बजार में ' के नायक कबीर को जाति–पाँति तथा हिन्दू–मुस्लिमों के बाह्याडम्बरों का विरोध करनेवाले रूप में चित्रित कर अपनी मानवतावादी चेतना को प्रकट किया है । सत्संग तथा भण्ड़ारे से जाति–पाँति और धर्म की मर्यादाएँ टूटती हैं । इसलिए भीष्म साहनी ने ' कबिरा

खड़ा बजार में ' के नायक कबीर को सत्संग तथा भण्डारे का आयोजन करते हुए दिखाकर अपनी मानवतावादी चेतना को स्पष्ट किया है । कबीर हिन्दू-मुस्लिमों के धार्मिक आडम्बरों का त्याग कर दोनों धर्मों को त्यागना चाहते हैं । धर्मविहिनता मनुष्यों को एकता के सूत्र में बाँध सकती है । भीष्म साहनी ने ' कबिरा खड़ा बजार में ' के नायक कबीर को हिन्दू-मुस्लिमों के मजहबों का त्याग करते हुए दिखाया है । इससे भीष्म साहनी में स्थित मानवतावादी चेतना का परिचय मिलता है ।

भीष्म साहनी के ई.स. 1977 से ई.स. 1996 तक लिखे सभी नाटक रंगमंचीय दृष्टि से सफल सिद्ध हुए है । इसलिए हम कह सकते हैं कि भीष्म साहनी के नाटकों में रंगमंचीय चेतना के दर्शन होते हैं । भीष्म साहनी के नाटकों में रंगनिर्देश के अंतर्गत आंगिक, वाचिक,आहार्य और सात्विक अभिनय के अनुकूल यथोचित मात्रा में रंगनिर्देश दिए गए हैं । ' हानूश ' और " रंग दे बसन्ती चोला ' नाटक के एकाध स्थल पर रंगनिर्देश की त्रुटि अवश्य रह गयी है । विवेच्य नाटकों में से ' हानूश ' नाटक में हानूश का घर और नगरपालिका का हाल कमरा की रंग-सज्जा में प्रतीकात्मकता ,यथार्थता और बिंबात्मकता को स्थान मिला है । विवेच्य नाटकों में यथास्थान चित्रांकित रंग-सज्जा ,प्रकृतिवादी रंग-सज्जा और प्रतीक रंग-सज्जा का प्रयोग किया है । नाटककार ने " कबिरा खड़ा बजार में ' माधवी ' , ' मुआवज़े ' और ' रंग दे बसन्ती चोला ' नाटकों की रंग-सज्जा में कतिपय दृश्यों में स्थल के नाम का निर्देश दिया है लेकिन उस स्थल की रंग-सज्जा के बारे में कोई विवरण नहीं दिया। नाटककार ने ' मुआवज़े " और ' रंग दे बसन्ती चोला ' नाटकों के कुछ दृश्यों में स्थान का नाम निर्देश भी नहीं दिया है । इस प्रकार नाटककार ने निर्देशक को रंग-सज्जा के अंतर्गत पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की है कि वह नाटकीय कथावस्तु ,पात्र, देश-काल-वातावरण आदि के अनुरूप रंग-सज्जा करें और उन दृश्यों को रंगमंचीय दृष्टि से सफल बनाये । नाटककार ने प्रकाश-योजना के अंतर्गत बत्ती जलाना, अँधेरे और प्रकाश के साथ मशालों की रोशनी , समयानुसार प्रकाश-परिवर्तन , रोशनी बुझाकर दृश्य की समाप्ति पुंजदीप प्रकाश-योजना और रंगीन प्रकाश-योजना को स्थान दिया है । नाटककार ने ध्वनि-संकेत के अंतर्गत घड़ी की टिक्-टिक् ,भागते कदमों की आवाज ,मन्दिरों की घण्टियों और अजान की आवाज, स्तोत्र और तोप चलने की आवाज, चायदानी टूटने की और गोली चलने की आवाज, नारों की आवाज, विविध वाद्यों की आवाज, कुत्तों और सियारों के भौंकने की आवाज, आकाशवाणी ,टेलीफोन की आवाज और लाउडस्पीकर की आवाज का यथास्थान प्रयोग किया है । इससे नाटकों में स्वाभाविकता आ गई है ।

भीष्म साहनी के नाटकों में से ' हानूश ' को छोड़कर शेष नाटकों में कुछ दृश्यों में नाटकीय कथावस्तु के अनुकूल गीत-संगीत का प्रयोग किया है । विवेच्य सभी नाटक संवाद-योजना की दृष्टि से

सफल सिद्ध हुए हैं । विवेच्य नाटकों में प्रयुक्त संवाद, संक्षिप्त ,पात्रानुकूल और मार्मिक हैं ।'मुआवज़े' के संवादों में तीखे व्यंग्य होने के बावजूद भी कटुक्तियाँ नहीं है तथा यथार्थ के नाम पर घटियापन नहीं है ।'रंग दे बसन्ती चोला ' के कुछ पात्रों के संवाद,भाषण एवं रतनदेवी का स्वगत कथन लम्बा अवश्य है । किन्तु उसमें प्रसंगानुकूलता है । अंक–योजना के अंतर्गत दृश्यों की संख्या के संबंध में हर नाटक में विविधता है । कुल मिलाकर भीष्म साहनी के नाटक रंगमंच पर सफल सिद्ध हुए है ।

प्रस्तुत लघु शोध–प्रबंध की मौलिकता---

1 भीष्म साहनी हिंदी नाटक साहित्य के सातवें दशक के महत्त्वपूर्ण नाटककार हैं । प्रस्तुत लघु शोध–प्रबंध में भीष्म साहनी के व्यक्तित्व और नाट्यसाहित्य पर यथोचित प्रकाश डाला गया है ।

2 कथ्य और रंगमंचीयता की दृष्टि से भीष्म साहनी के नाटक महत्त्वपूर्ण हैं । इस लघु शोध–प्रबंध में उनके नाटकों के कथ्य और रंगमंचीयता का विस्तृत विवेचन–विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है ।

3 समाज में व्याप्त कुरीतियाँ, धर्म, विवाह–प्रथा, वर्ग तथा पारिवारिक संबंध, जाति–व्यवस्था और सामाजिक संबंध आदि का चित्रण भीष्म साहनी के नाटकों में सर्वत्र प्राप्त होता है।इस लघु शोध–प्रबंध में इनका विस्तृत विवेचन–विश्लेषण किया गया है।

4 मनुष्य को मानवतावादी भूमिका ऊर्ध्वगामी बनाती है । मानवतावादी विचारधारा के कारण मनुष्य में आपसी प्रेम तथा सद्भाव की भावना पनपती है । मनुष्य कर्तव्य, त्याग और निष्ठा को अपनाकर महामानव बनता है । अतः भीष्म साहनी के नाटकों में व्याप्त मानवतावादी चेतना पर प्रस्तुत शोध–कार्य के जरिए पहली बार रोशनी डाली गयी है । तत्संबंधी यथोचित विवेचन–विश्लेषण इस लघु शोध–प्रबंध में किया गया है ।

प्रस्तुत शोध–कार्य की उपलब्धि–

1 **विवेच्य नाटकों के अध्ययन से सामाजिक समता को बढ़ावा देने में सहायता मिल सकती है।**

2 भीष्म साहनी एक संवेदनशील और सामाजिक प्रतिबद्धता का वहन करनेवाले जिम्मेदार साहित्यिक होने के कारण उनका व्यक्तिगत जीवन और लेखन युवा पीढ़ी के लिए निश्चय ही प्रेरणादायी रहेगा ।

3 भीष्म साहनी के नाटक का हर संवेदनशील पाठक तथा दर्शक मानवतावाद का समर्थक बनेगा इसमें कोई संदेह नहीं।

अध्ययन की नई दिशाऍं--

भीष्म साहनी के नाटकों को लेकर कुछ अन्य दिशाओं से भी शोध-कार्य किए जा सकते हैं ---

1 "भीष्म साहनी के नाटकों की नायिकाऍं " ।

2 "भीष्म साहनी के नाटकों में सामाजिक चेतना " ।

3 "भीष्म साहनी के नाटकों के संवादों का अनुशीलन" ।

4 "भीष्म साहनी के नाटकों की रंगमंचीयता" ।

यहाँ मैंने अपनी सीमा में अध्ययन किया है । इसी नाटककार के नाटकों पर उपर्युक्त विषयों को लेकर स्वतंत्र रूप से शोध-कार्य हो सकते हैं ।

परिशिष्ट

प्रश्नावली

१ आप बचपन में बीमार रहते थे। आप की माँ धार्मिक तो पिताजी आर्यसमाजी थे। आप की बीमारी से चिन्तित और परेशान माँ ने आप के स्वास्थ्य-लाभ के लिए कभी किसी देवी-देवताओं की मन्नत माँगी थी?

नहीं। केवल एक बार मियादी बुखार आया था, पर वह भी मेरे अस्वस्थ होने के कारण नहीं, इसलिये कि हम लोग मई एक मेले में ले गये थे, [illegible] रही थी। [illegible]

२ आप बचपन में किस बीमारी से पीड़ित रहते थे? क्या आप अच्छे बच्चे की तरह चुपचाप दवाईयाँ लेते थे, या शोर-हंगामा मचाते थे?

कोई विशेष बीमारी नहीं थी। मैं कमज़ोर था, जल्दी थक जाता था, सर्दी लग जाता था। अस्वस्थ होने पर शोर-हंगामा नहीं मचाता था। चुपचाप पड़ा रहता था, मन-बहलाव के लिये इकन्नी-दुअन्नी आदि सिक्के बटोरता-गिनता रहता था। माँ आकर मेरे सिरहाने बैठती, मेरा सिर अपनी गोदी में रखती, माथा ~~सहलाव~~ सहलाती तो बहुत अच्छा लगता।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOL

३. आप ने रूसी साहित्य का अनुवाद किया है। आप को किस रूसी लेखक की कौन-सी रचना विशेष प्रिय है?

मैंने अंग्रेज़ी से हिन्दी, हिन्दी से अंग्रेज़ी, रूसी भाषा से हिन्दी, पंजाबी से हिन्दी में साहित्यिक पुस्तकों का अनुवाद किया है। मैं सात वर्ष तक मास्को के विदेशी भाषा प्रकाशन गृह में अनुवादक के रूप में काम करता था। लेव टालस्टाय के उपन्यास 'पुनरुत्थान' तथा टालस्टाय की लम्बी कहानियों का हिन्दी में अनुवाद किया था। टालस्टाय की अनेक रचनाएं मुझे प्रिय हैं जैसे "युद्ध और शांति", "अन्ना करेनीना" आदि।

४. आप नाट्यलेखन की ओर क्यों प्रवृत्त हुए?

बचपन में मुझे स्कूल तथा कालिज में पहले कभी नाटकों में भाग लेने का बहुत शौक था। बाद में मैं IPTA नाटक मंडली में भी काम करता रहा।

मास्को निवास के दिनों में मैं और मेरी पत्नी एक बार चेकोस्लोवाकिया की यात्रा पर गये थे। वहां उन दिनों मेरे मित्र निर्मल वर्मा रहते थे। उन्होंने मुझे एक अनोखी मीनार पर लगी घड़ी दिखायी जो उस देश में लगायी जाने वाली पहली घड़ी थी। उस की कहानी मुझे बड़ी रोचक और नाटकीय लगी। मैं ने उस की कथा के आधार पर 'हानूश' नाम से नाटक लिखा। उस के बाद नाटक लिखने में मेरी रुचि बढ़ती गयी।

५. 'हानूश' लिखने के पीछे क्या भारत की तत्कालीन आपातकालीन स्थिति कारणीभूत है, या कोई और कारण है?

आपातकालीन स्थिति को ध्यान में रखकर नाटक लिखा गया हो, ऐसा नहीं था। परन्तु 'हानूश' का कथानक आपातकालीन वातावरण के अनुरूप बैठता था। दर्शकों ने भी उसे उसी परिप्रेक्ष्य में देखा तथा सराहा था।

६. 'माधवी' नाटक की नायिका 'माधवी' और आज की आधुनिक नारी में क्या साम्य है?

नाटक की नायिका माधवी अपने अधिकारों की बात तो नहीं करती जैसा आज की नारी करती है, परन्तु उस का शोषण हुआ है और ~~महत्~~ महत्वाकांक्षी गालव उसे अपनी स्वार्थ-सिद्धि का माध्यम बनाता रहा है, इस के प्रति वह सचेत हो जाती है। उस के चरित्र में एक प्रकार की गरिमा है, गांभीर्य है, जो उस की उदार, निःस्वार्थ और उदात्त भावना की देन है। वह क्षमा भी कर सकती है और भूल भी सकती है। आज की नारी की मानसिकता ~~स्व~~ अधिक आत्मकेंद्रित है।

७. 'मुआवजे' में दीनू रिक्शावाला और शांति की शादी मुआवजे के दस हजार रूपए पाने के लिए होती है। नाटक में वर्णित यह घटना क्या आप को अतिरंजित नहीं लगती?

यह नाटक आज की स्थिति पर व्यंग्य है। व्यंग्य में अतिरंजना का होना स्वाभाविक है। नाटक एक प्रहसन है, व्यंग्यात्मक प्रहसन। इसे एक यथार्थपरक नाटक के रूप में नहीं देखा जा सकता।

८. 'रंग दे बसन्ती चोला' नाटक लिखने के पीछे आप का कौन-सा उद्देश्य है?

'जलियांवाला बाग' का गोलीकांड 1919 में अमृतसर में हुआ, जिस में भारी संख्या में निहत्थे, निरीह लोग मारे गये। उसी घटना को केन्द्र में रख कर यह नाटक लिखा गया था।

९. रंग दे बसन्ती चोला में प्रयुक्त आवाज को क्या आप डायर की अन्तरात्मा की आवाज मानते हैं या भारतीय लोगों की आवाज मानते हैं?

भारतीय लोगों की आवाज़

१०. आप को अपना कौन-सा नाटक विशेष प्रिय हैं और क्यों?

"हानूश"

कुछ इस लिये कि वह नाटक के क्षेत्र में मेरा पहला गंभीर प्रयास था। कुछ इस लिये कि सृजनात्मक शायद के वह मेरी नज़र में अधिक स्पष्ट है। कुछ इसलिये भी कि एक ऐसे समाज में जिस की बागडोर सत्ताधारियों के हाथ में है, एक कलाकार की स्थिति अधिक स्पष्ट हो जाए, मार्मिकता के साथ उभर कर सामने आयी है।

भीष्म साहनी

[ ]

हस्ताक्षर

११ आपने रशियन भाषा में लिखित पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद किया है। आपने रशियन भाषा की पढ़ाई कब, कहाँ और कैसे की? आपका रुझान रशियन भाषा सीखने की ओर क्यों गया? क्या आपने 'रशियन भाषा पदविका' जैसी कोई परीक्षा पास की है? (कौनसे साल?)

मैं ने रूसी भाषा का अध्ययन मास्को में ही किया। टाल्सटॉय आदि की जिन रचनाओं का मैं ने हिंदी में अनुवाद किया वह उन पुस्तकों के अंग्रेज़ी अनुवाद के माध्यम से किया था। बाद में जब रूसी भाषा से मेरी जानकारी बेहतर हो गयी तो दो एक पुस्तकों का अनुवाद मैं ने सीधा रूसी भाषा से भी किया।

१२ क्या आप बी.ए. की परीक्षा स्थानीय (रावळपिंडी) डी.ए.वी. कॉलेज से कौन से साल पास हुए हैं?

डी.ए.वी. कालिज (रावलपिंडी) से मैं ने Intermediate की परीक्षा 1933 में पास की। उसके बाद मैं लाहौर चला गया जहां गोवर्नमेंट कालिज से मैं ने बी.ए. (आनर्स) की परीक्षा 1935 में और एम.ए. (अंग्रेज़ी साहित्य) की परीक्षा 1937 में पास की।

भीष्म साहनी

। (ब) परिशिष्ट --

प्रश्नावली

प्रश्न 1 आप बचपन में बीमार रहते थे । आप की माँ धार्मिक तो पिताजी आर्यसमाजी थे । आप की बीमारी से चिन्तित और परेशान माँ ने आप के स्वास्थ्य-लाभ के लिए कभी किसी देवी-देवाताओं की मन्नत माँगी थी ?

उत्तर -- नहीं । केवल एक बार मिर्चे वारी थीं, पर वह भी मेरे अस्वस्थ होने के कारण नहीं , इसलिये कि हम दोनों भाई एक मेले में खो गये थे, जिस कारण माँ बड़ी चिन्तित रही थी । हमारे घर पहुँच जाने पर उसने आग में मिर्चे डाली थीं, शायद अपशगुन दूर करने के लिये । बचपन से मैं दुबला था, पर मुझे कोई गंभीर बीमारी नहीं थी ।

प्रश्न 2 आप बचपन में किस बीमारी से पीड़ित रहते थे ? क्या आप अच्छे बच्चे की तरह चुपचाप दवाईयाँ लेते थे , या शोर – हंगामा मचाते थे ?

उत्तर – कोई विशेष बीमारी नहीं थी । मैं कमजोर था, जल्दी थक जाता था, सर्दी खा जाता था । अस्वस्थ होने पर शोर-हंगामा नहीं मचाता था । चुपचाप पड़ा रहता था, मन-बहलाव के लिए इकन्नी-दवन्नी आदि सिक्के बटोरता – गिनता रहता था । माँ आकर मेरे सिरहाने बैठती मेरा सिर अपनी गोदी में रखती ,माथा सहलाती ,तो बहुत अच्छा लगता ।

प्रश्न 3 : आपने रूसी साहित्य का अनुवाद किया है । आपको किस रूसी लेखक की कौन-सी रचना विशेष प्रिय है ?

उत्तर – मैंने अंग्रेजी से हिन्दी ,हिन्दी से अंग्रेजी,रूसी भाषा से हिन्दी ,पंजाबी से हिन्दी में साहित्यिक पुस्तकों के अनुवाद किये हैं । मै सात वर्ष तक मास्को के विदेशी भाषा प्रकाशन गृह में अनुवादक के रूप में काम करता था । लेव टाल्सटाय के उपन्यास 'पुनरूत्थान' तथा टाल्सटाय की लम्बी कहानियों का हिन्दी में अनुवाद किया था । टाल्सटाय की अनेक रचनाएँ मुझे प्रिय हैं-जैसे " युध्द और शांति " अन्ना केरेनीना "आदि ।

प्रश्न 4 आप नाट्यलेखन की ओर क्यों प्रवृत्त हुए ?

उत्तर – बचपन में मुझे स्कूल तथा कालिज में पढ़ते समय नाटकों में भाग लेने का बहुत शौक था । बाद में मैं IPTA नाटक मण्डली में भी काम करता रहा ।

मास्को निवास के दिनों में मैं और मेरी पत्नी एक बार चेकोस्लोवाकिया की यात्रा पर गये थे । वहाँ उन दिनों मेरे मित्र निर्मल वर्मा रहते थे , उन्होंने मुझे एक अनोखी मीनार पर लगी घड़ी दिखायी जो उस देश में लगायी जाने वाली पहली घड़ी थी। उसकी कहानी मुझे बड़ी रोचक और नाटकीय लगी । मैंने उस की कथा के आकार पर "हानूश" नाम से नाटक लिखा। उसके बाद नाटक लिखने में मेरी सोच बढ़ती गयी ।

प्रश्न 5 'हानूश "लिखने के पीछे क्या भारत की तत्कालीन आपात्कालीन स्थिति कारणीभूत है, या कोई और कारण है ?

उत्तर – आपात्कालीन स्थिति को ध्यान में रखकर नाटक लिखा गया हो, ऐसा नहीं था । परन्तु "हानूश " का कथानक आपत्कालीन वातावरण के अनुरूप बैठता था । दर्शकों ने भी उसे परिप्रेक्ष्य में देखा तथा सराहा था ।

प्रश्न 6 'माधवी' नाटक की नायिका "माधवी "और आज की आधुनिक नारी में क्या साम्य है ?

उत्तर – नाटक की नायिका माधवी अपने अधिकारों की बात तो नहीं करती, जैसा आज की नारी करती करती है, परन्तु उस का शोषण हुआ है और महत्त्वाकांक्षी गालव उसे अपनी स्वार्थ –सिद्धि का माध्यम बनाता रहा है, इसके प्रति वह सचेत हो जाती है । उसके चरित्र में एक प्रकार की गरिमा है, गांभीर्य है, जो उसकी उदार, निःस्वार्थ और उदात्त भावना की देन है। वह क्षमा भी कर सकती है और भूल भी सकती है, आज की नारी की मानसिकता अधिक आत्मकेन्द्रित है ।

प्रश्न 7 "मुआवजें " में दीनू रिक्शावाला और शांति को शादी मुआवज़े के दस हजार रूपए पाने के लिए होती है । नाटक में वर्णित यह घटना क्या आप को अतिरंजित नहीं लगती ?

उत्तर – यह नाटक आज की स्थिति पर व्यंग्य है । व्यंग्य में अतिरंजना का होना स्वाभाविक है । नाटक एक प्रहसन है, व्यंग्यात्मक प्रहसन ।इसे एक यथार्थपरक नाटक के रूप में नहीं देखा जा सकता ।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

प्रश्न 8 ' रंग दे बसन्ती चोला ' नाटक लिखने के पीछे आप का कौन–सा उद्देश्य है ?

उत्तर – 'जालियनवालाँ बाग ' का गोलीकांड 1919 में अमृतसर में हुआ, जिसमें भारी संख्या में निहत्थे ,निर्दोष लोग मारे गये, उसी घटना को केन्द्र में रखकर यह नाटक लिखा गया था ।

प्रश्न 9 ' रंग दे बसन्ती चोला ' में प्रयुक्त आवाज को क्या आप डायर की अन्तरात्मा की आवाज मानते हैं या भारतीय लौगों की आवाज मानते हैं ?

उत्तर – भारतीय लोगों की आवाज ।

प्रश्न 10 आप को अपना कौन–सा नाटक विशेष प्रिय है और क्यों ?

उत्तर – 'हानूश' कुछ इसलिए कि वह नाटक के क्षेत्र में मेरा पहला गंभीर प्रयास था । कुछ इसलिए कि सर्जनात्मक दृष्टि से वह मेरी नजर में अधिक समृद्ध है । कुछ इसलिए भी कि एक ऐसे समाज में जिसकी बागड़ोर सत्ताधारियों के हाथ में है, एक कलाकार की स्थिति अधिक स्पष्ट होकर मार्मिकता के साथ उभर कर सामने आयी है ।

प्रश्न 11 आपने रशियन भाषा में लिखित पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद किया है । आपने रशियन भाषा की पढ़ाई कब, कहाँ और कैसे की ? आपका रूझान रशियन भाषा सीखने की ओर क्यों गया : क्या आपने 'रशियन भाषा पदविका ' जैसी कोई परीक्षा पास की है ?(कौन–से साल में ?)

उत्तर – मैंने रूसी भाषा का अध्ययन मास्को में ही किया । टाल्सटाय आदि की जिन रचनाओं का मैंने हिन्दी में अनुवाद किया।वह उन पुस्तकों के अंग्रेजी अनुवाद के माध्यम से किया था ।बाद में जब रूसी भाषा से मेरी जानकारी बेहतर हो गयी तो दो एक पुस्तकों का अनुवाद मैंने सीधा रूसी भाषा से भी किया ।

प्रश्न 12 क्या आप बी.ए. की परीक्षा स्थानीय (रावलपिण्डी) डी.ए. वी.कॉलेज से कौन से साल पास हुए है ?

उत्तर – डी.ए.वी.कालिज (रावलपिण्डी) से मैंने Intermediate की परीक्षा 1933 में पास की थी । उसके बाद मैं लाहौर चला गया जहाँ गवर्नमेंट कालिज से मैंने बी.ए.(आनर्स) की परीक्षा 1935 में और एम.ए. (अंग्रेजी साहित्य) की परीक्षा 1937 में पास की ।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

संदर्भ ग्रंथ सूची

BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR LIBRARY

संदर्भ-ग्रंथ-सूची

आधार-ग्रंथ-सूची

	लेखक का नाम	ग्रंथ-नाम	प्रकाशन एवं प्राप्त संस्करण
1	साहनी भीष्म	हानूश	राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली 110 002 पुनर्मुद्रित – 1995 ।
2	साहनी भीष्म	कबिरा खड़ा बजार में	राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1– बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली 110 002 पुनर्मुद्रित – 1996 ।
3	साहनी भीष्म	माधवी	राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1 –बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली 110 002 पुनर्मुद्रित – 1995 ।
4	साहनी भीष्म	मुआवज़े	राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि., 2/38, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110 002 द्वितीय संस्करण – 1996 ।
5	साहनी भीष्म	रंग दे बसन्ती चोला	किताबघर, 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली – 110 002 प्रथम संस्करण – 1996 ।

संदर्भ-ग्रंथ (हिंदी) सूची

	लेखक/संपादक का नाम	ग्रंथ-नाम	प्रकाशन एवं प्राप्त संस्करण
6	चन्द्रशेखर((डॉ.)	समकालीन हिन्दी नाटक: कथ्य चेतना	आत्माराम एण्ड सन्स, कश्मिरी गेट, दिल्ली 110 006, संस्करण–1982 ।
7	त्रिपाठी (डॉ.)वसिष्ठ नारायण	नाटक के रंगमंचीय प्रतिमान	जगतराम एण्ड सन्स, ।X/221, मेन बाजार, गांधी नगर, दिल्ली 110 031 प्रथम संस्करण 1991 ।
8	त्रिपाठी।(डॉ. सत्यवती	आधुनिक हिन्दी नाटकों में प्रयोगधर्मिता	राधाकृष्ण प्रकाशन, 2/38 , दरियागंज, अंसारी मार्ग, नई दिल्ली 110 002 प्रथम संस्करण 1991 ।
9	सं. माळी डॉ.) शिवराम और गोकाककर(डॉ.) सुधाकर	नाटक और रंगमंच (डॉ. चन्दूलाल दुबे अभिनन्दन ग्रन्थ)	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 23, दरियागंज, नई दिल्ली 110 002 प्रथम संस्करण 1979 ।
10	मिश्र रवीन्द्रनाथ	समीक्षाएँ : विविध आयाम	अमन प्रकाशन, 104, ए/118, रामबाग , कानपुर, प्रथम संस्करण 1994 ।
11	रस्तोगी (डॉ.) गिरीश	समकालीन हिन्दी नाटककार	इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, के–71, कृष्णनगर, दिली 110 051, प्रथम संस्करण 1982 ।

संदर्भ-ग्रंथ(हिंदी) सूची

	लेखक/संपादक का नाम	ग्रंथ-नाम	प्रकाशन एवं प्राप्त संस्करण
12	सं. सक्सेना राजेश्वर, ठाकूर प्रताप	भीष्म साहनी : व्यक्ति और रचना	वाणी प्रकाशन, कमलानगर, दिल्ली 110 007 प्रथम संस्करण 1982 ।
13	साहनी भीष्म	अपनी बात	वाणी प्रकाशन, 21 ए, दरियागंज, नई दिल्ली 110002 द्वितीय संस्करण 1995 ।
14	साहनी भीष्म	मेरे साक्षात्कार: भीष्म साहनी	किताबघर, 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110 002 प्रथम संस्करण 1996 ।

संदर्भ-ग्रंथ (अंग्रेजी) सूची

15	Iver Mac and Page	Society:An Analysis	Little Essex Street London Wc2 also Bombay Calcutta, Madras, Melbourne, Edition-1965
16	Ginsberg Morris	Sociology	The Home University Library of Modern Knowldge London Edition-1961.
17	Dresslar David	Sociology:The Study of Human Intraction	United States by Alfred A.Knopf Inc. New York Edition - 1965.

कोश-ग्रन्थ-सूची

	संपादक का नाम	कोश-ग्रंथ-नाम	प्रकाशन एवं प्राप्त संस्करण
18	चातक (डॉ.) गोविन्द	आधुनिक हिन्दी शब्दकोश	तक्षशिला प्रकाशन, 23/4762, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110 002 ।
19	नवल जी	नालन्दा विशाल शब्दसागर	आदिश बुक डिपो, 7 ए/29 डब्ल्यू, इ.ए., करौल बाग, नई दिल्ली 110 005 संस्करण – 1988 ।
20	वर्मा रामचन्द्र	संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर	कोश संस्थान (कोश विभाग) नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, प्रथम संस्करण, 1965 ।
21	वर्मा रामचन्द्र, प्रमुख संपादक कपूर	मानक हिन्दी कोश दूसरा खण्ड	हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग प्रथम संस्करण–1965 ।
22	वर्मा रामचन्द्र, प्रमुख संपादक कपूर बदरीनाथ स. संपादक	मानक हिंदी कोश चौथा खण्ड	हिन्दी साहित्य –सम्मेलन, प्रयाग प्रथम संस्करण – 1965 ।
23	वसु नगेन्द्रनाथ	हिन्दी विश्वकोश (सप्तम भाग)	बी.आर. पब्लिशिंग कार्पोरेशन 461, विवेकानंद नगर, दिल्ली 110052 संस्करण –1986 ।
24	शुक्ल ('रसाल') (डॉ.) रामशंकर	भाषा–शब्द-कोष	रामनारायणलाल बेनीप्रसाद, इलाहाबाद–2 चतुर्थ संस्करण – 1961 ।

पत्र–पत्रिकाएँ–सूची

	संपादक का नाम	पत्र–पत्रिकाएँ	प्रकाशन एवं प्राप्त संस्करण
25	राय गोपाल	समीक्षा	सीमा कुमारी द्वारा ,समीक्षा कार्यालय, प्रोफेसर्स क्वार्टर्स,रानीघाट,पटना–6 अप्रैल–जून ,1994 ।
26	राय गोपाल	समीक्षा	सीमा कुमारी द्वारा ,समीक्षा कार्यालय, प्रोफेसर्स क्वार्टर्स ,रानीघाट,पटना–6, अप्रैल–जून ,1993 ।
27	विद्यालंकार वि.सा.	प्रकर	ए–8/42, राणा प्रताप बाग, दिल्ली – 110 007 अगस्त,1982 ।
28	सिंह नामवर	आलोचना	राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 8, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–2 के लिए श्रीमती शीला सन्धू द्वारा प्रकाशित , जनवरी –मार्च, 1985 ।